कथा सरिता

स्व-हित है, तो पर-हित है

एक बार की बात है... एक बहुत ही पुण्य करने वाला व्यक्ति अपने परिवार सहित तीर्थ के लिए निकला। कई कोस दूर जाने के बाद पूरे परिवार को प्यास लगने लगी। ज्येष्ठ का महीना था, आस पास कहीं पानी नहीं दिखाई पड़ रहा था। उसके बच्चे प्यास से व्याकुल होने लगे., उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या करे...। उनके पास जितना भी पानी था, वो समाप्त हो चुका था। एक समय ऐसा आया कि उसे भगवान से प्रार्थना करनी पड़ी कि 'हे प्रभु! अब आप ही कुछ करो मालिक...।'

इतने में उसे कुछ दूर पर एक साधू तप करता हुआ नज़र आया। व्यक्ति ने उस साधू से जाकर अपनी समस्या बताई...। साधू बोले, 'यहाँ से एक कोस दूर उत्तर की दिशा में एक छोटी दरिया बहती है, जाओ जाकर वहां से पानी की प्यास बुझा लो...।'

साधू की बात सुनकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुयी और उसने साधू को धन्यवाद बोला। पत्नी एवं बच्चों की स्थिति नाज़ुक होने के कारण वहीं रुकने के लिया बोला और खुद पानी लेने चला गया। जब वो दरिया से पानी लेकर लौट रहा था, तो उसे रास्ते में पाँच व्यक्ति मिले जो अत्यंत प्यासे थे। उस पुण्य आत्मा को उन पाँचो व्यक्तियों की प्यास देखी नहीं गयी और अपना सारा पानी उन प्यासों को पिला दिया। जब वो दोबारा पानी लेकर आ रहा था तो पाँच अन्य व्यक्ति मिले जो उसी तरह प्यासे थे...। पुण्य आत्मा ने फिर अपना सारा पानी उनको पिला दिया...।

यही घटना बार बार हो रही थी...और काफी समय बीत जाने के बाद जब वो नहीं आया तो साधू उसकी तरफ चल पड़ा...। बार बार उसके इस पुण्य कार्य को देखकर साधू बोला - 'हे पुण्य आत्मा, तुम बार बार अपना बाल्टी भरकर दरिया से लाते हो और किसी प्यासे के लिए खाली कर देते हो.. इससे तुम्हें क्या लाभ मिला...?'

पुण्य आत्मा ने बोला, 'मुझे क्या मिला या क्या नहीं मिला, इसके बारे में मैंने कभी नहीं सोचा...। पर मैंने अपना स्वार्थ छोड़कर अपना धर्म निभाया।' साधू बोला - 'ऐसे धर्म निभाने से क्या फ़ायदा... जब तुम्हारे अपने बच्चे और परिवार ही जीवित ना बचे? तुम अपना धर्म ऐसे भी निभा सकते थे जैसे मैंने निभाया।'

पुण्य आत्मा ने पूछा - 'कैसे महाराज?' साधू बोला - 'मैंने तुम्हें दरिया से पानी लाकर देने के बजाय दरिया का रास्ता ही बता दिया...। तुम्हें भी उन सभी प्यासों को दरिया का रास्ता बता देना चाहिए था..., ताकि तुम्हारी भी प्यास मिट जाये और अन्य प्यासे लोगों की भी...। फिर किसी को अपनी बाल्टी खाली करने की ज़रूरत ही नहीं...।' इतना कहकर साधू अंतर्ध्यान हो गया...। पुण्य आत्मा को सबकुछ समझ आ गया कि अपना पुण्य खाली कर दूसरों को देने के बजाय, दूसरों को भी पुण्य अर्जित करने का रास्ता या विधि बतायें।

मित्रों - अगर किसी के बारे में अच्छा सोचना है, तो पहले उसे उस परमात्मा से जोड़ दो ताकि उसे हमेशा के लिए लाभ मिलता रहे।

समझने हेतु अनुभव ज़रूरी

एक बादशाह अपने कुत्ते के साथ नाव में यात्रा कर रहा था। उस नाव में अन्य यात्रियों के साथ एक दार्शनिक भी था।

कुत्ते ने कभी नौका में सफर नहीं किया था, इसलिए वह अपने को सहज महसूस नहीं कर पा रहा था। वह उछल-कूद कर रहा था और किसी को चैन से नहीं बैठने दे रहा था। मल्लाह उसकी उछल-कूद से परेशान था कि ऐसी स्थिति में यात्रियों की हड़बड़ाहट से नाव डूब जाएगी। वह भी डूबेगा और दूसरों को भी ले डूबेगा। परन्तु कुत्ता अपने स्वभाव के कारण उछल-कूद में लगा था। ऐसी स्थिति देखकर बादशाह भी गुस्से में था, पर कुत्ते को सुधारने का कोई उपाय उसे समझ में नहीं आ रहा था।

नाव में बैठे दार्शनिक से रहा नहीं गया। वह बादशाह के पास गया और बोला : 'सरकार! अगर आप इज़ाज़त दें तो मैं इस कुत्ते को भीगी बिल्ली बना सकता हूँ।' बादशाह ने तत्काल अनुमति दे दी।

दार्शनिक ने दो यात्रियों का सहारा लिया और उस कुत्ते को नाव से उठाकर नदी में फेंक दिया। कुत्ता तैरता हुआ नाव के खूंटे को पकड़ने लगा। उसको अब अपनी जान के लाले पड़ रहे थे। कुछ देर बाद दार्शनिक ने उसे खींचकर नाव में चढ़ा लिया। वह कुत्ता चुपके से जाकर एक कोने में बैठ गया। नाव के यात्रियों के साथ बादशाह को भी उस कुत्ते के बदले व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह ने दार्शनिक से पूछा : 'यह पहले तो उछल-कूद और हरकतें कर रहा था। अब कैसे यह पालतू बकरी की तरह बैठा है?' दार्शनिक बोला : 'खुद तकलीफ का स्वाद चखे बिना किसी को दूसरे की विपत्ति का अहसास नहीं होता है। इस कुत्ते को जब मैंने पानी में फेंक दिया तो इसे पानी की ताकत और नाव की उपयोगिता समझ में आ गयी।'

असली वारिस वो...

एक भले आदमी का निधन हो गया, लोग अर्थी लेकर जाने को तैयार हुये और जब उठाकर शमशान ले जाने लगे तो एक आदमी आगे आया और अर्थी का एक कोना पकड़ लिया और बोला : 'मरने वाले से मुझे 5 लाख लेने हैं, पहले मुझे पैसे दो फिर अर्थी को जाने दूंगा।'

अब तमाम लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं...। बड़े बेटों ने कहा: 'पापा ने हमें तो कोई ऐसी बात नहीं कही कि वह कर्ज़दार हैं, इसलिए हम नहीं दे सकते।'

मृतक के भाइयों ने कहा : 'जब भैया के बेटे ज़िम्मेदार नहीं तो हम क्यों दें!' अब सारे खड़े हैं और उसने अर्थी पकड़ी हुई है! जब काफी देर गुज़र गई तो बात घर की औरतों तक भी पहुंच गई। मरने वाले की इकलौती बेटी ने जब बात सुनी तो फौरन अपना सारा ज़ेवर उतारा और अपनी सारी नकद रकम जमा करके उस आदमी के लिए भिजवा दी और कहा: 'भगवान के लिए ये रकम और जेवर बेच के पापा द्वारा ली गई कर्ज़ की अदायगी कर लो और बाकी भी बचा हुआ कर्ज़ वापस कर दूंगी, मेरे पिताजी की अंतिम यात्रा को ना रोको। मैं मरने से पहले पापा का सारा कर्ज़ अदा कर दूंगी।'

अब वह अर्थी पकड़ने वाला शख्स खड़ा हुआ और सारे लोगों से मुखातिब हो कर बोला: 'असल बात ये है कि मैंने मरने वाले से 5 लाख कर्ज़ लिया था जो सूद सहित उन्हें वापस करना था। इनके किसी वारिस को मैं जानता नहीं था तो मैंने ये नाटक किया। अब मुझे पता चल चुका है कि उनकी असली वारिस बेटी है, कोई बेटा या भाई नहीं है।' कर्ज़दार घर आया और बेटी को पाँच लाख रुपये व सूद वापस कर दिया और जाने लगा, पर जाते जाते एक बात कह गया : 'बेटियों को कभी पराया मत समझो।'

जिसमें नुकसान सहने की ताकत हो वही मुनाफा कमा सकता है, फिर चाहे वो कारोबार हो या रिश्ते...।

पकड़िये मत...!

एक दिन की बात है, जब तक मनोवैज्ञानिक अध्यापक छात्रों को तनाव से निपटने के लिए उपाय बता रहे थे। शिक्षक पानी का ग्लास उठाते हैं। सभी छात्र यह सोचते हैं कि वह यह पूछेंगे कि ग्लास आधा खाली है या आधा भरा हुआ। लेकिन अध्यापक महोदय ने इसकी जगह एक दूसरा प्रश्न उनसे पूछा: 'जो पानी से भरा हुआ ग्लास मैंने पकड़ा हुआ है, यह कितना भारी है?'

छात्रों ने उत्तर देना शुरू किया। कुछ ने कहा थोड़ा सा तो कुछ ने कहा शायद आधा लीटर, कुछ ने कहा शायद 1 लीटर।

अध्यापक ने कहा: 'मेरी नज़र में इस ग्लास का कितना भार है यह मायने नहीं रखता। बल्कि यह मायने रखता है कि इस ग्लास को कितनी देर पकड़े रखता हूँ तो यह हल्का लगेगा। अगर मैं इसे एक घंटे पकड़े रखूंगा तो इसके भार से मेरे हाथ में थोड़ा सा दर्द होगा, अगर मैं इसे पूरे दिन पकड़े रखूंगा तो मेरे हाथ एकदम सुन्न पड़ जाएंगे और पानी का यही ग्लास जो शुरुआत में हल्का लग रहा था, उसका भार इतना बढ़ जायेगा कि अब ग्लास हाथ से छूटने लगेगा। तीनों ही दशाओं में पानी के ग्लास का भार नहीं बदलेगा, लेकिन जितना ज़्यादा मैं इसे पकड़े रखूंगा उतना ज़्यादा मुझे इसके भारीपन का एहसास होता रहेगा।

मनोवैज्ञानिक अध्यापक ने आगे बच्चों से कहा: 'आपके जीवन की चिंताएं और तनाव काफी हद तक इस पानी के ग्लास की तरह हैं। इन्हें थोड़े समय के लिए सोचो तो कुछ नहीं होता, इन्हें थोड़े ज़्यादा समय के लिए सोचो तो इससे थोड़ा सरदर्द का एहसास होना शुरू हो जाएगा, इन्हें पूरा दिन सोचोगे तो आपका दिमाग सुन्न और गतिहीन पड़ जाएगा।'

कोई भी घटना या परिणाम हमारे हाथों में नहीं है, लेकिन हम उसे किस तरह हैंडल करते हैं ये सब हमारे हाथों में ही है। बस ज़रूरत है इस बात को सही से समझने की। आप अपनी चिंताएं छोड़ दें। जितनी देर आप टेंशन अपने पास रखोगे, उतना ही इसके भार का एहसास बढ़ता जाएगा। यही चिंता बाद में तनाव का कारण बन जाएगी और बहुत सी परेशानियां पैदा हो जाएंगी।

समस्तीपुर-बिहार। शिवजयंती कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए संतोष यादव,ज़ोनल हेड,टाटा ए.आई.जी. पटना, रामगोपाल सुरेका,पूर्व उपाध्यक्ष,बिहार इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन पटना, डॉ. यू.एस.प्रसाद,जिला सचिव,आई.एम.ए., ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. सविता तथा ब्र.कु. कृष्ण।

दिल्ली-पीतमपुरा। महाशिवरात्रि पर आयोजित कलश यात्रा के शुभारंभ अवसर पर चेयरमैन ललित जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रभा।

सिकन्द्राराऊ-उ.प्र.। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए सब इंस्पेक्टर मनोज शर्मा, ब्र.कु. नैना तथा अन्य।

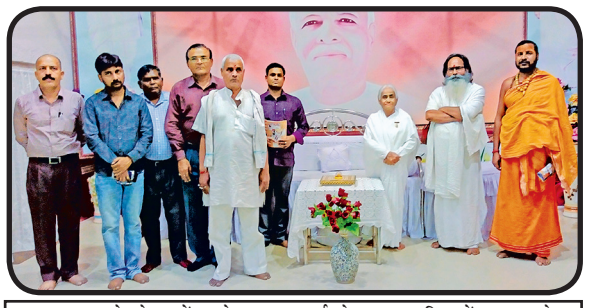

चुनार-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में महामण्डलेश्वर स्वामी अचलानंद महाराज, सतुआ बाबा(सुशील सिंह), द्विजेन्द्र कुमार द्विवेदी,प्रसिद्ध अधिवक्ता,इलाहाबाद हाईकोर्ट तथा अन्य विशिष्ट लोगों के साथ ब्र.कु. कुसुम।

दिल्ली-पीतमपुरा। महिला दिवस पर आयोजित 'नारी सशक्तिकरण' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।

नई दिल्ली-साध नगर। हिन्दु नववर्ष उत्सव पर पालम सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज को उनके उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए निगम पार्षद बहन इंद्र कौर।